ISSN: 2321-8819 (Online) 2348-7186 (Print) Impact Factor: 1.498 Vol. 7, Issue 8, August, 2019

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर बिहार की महिलाओं का योगदान

अरूण कुमार

मु0 टीचर्स कॉलोनी (खराजपवुर रोड), लहेरियासराय, दरभंगा–846001, बिहार

संक्षिप्त सार

देश भर में जब महिलाएं अपने अधिकार के लिए आंदोलन कर रही थीं, बिहार उस आंदोलन से अछूता नहीं था। परंपरओं की अनेक धाराओं के विरूद्ध बिहार की महिलाओं ने भी मोर्चा खोला। बिहार को जब बंगाल प्रेसिडेंसी से अलग किया गया, उस समय बिहार में स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या काफी कम थी। उसी दौरान शुरू हुए सुधार आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने भूमिका निभाई। शिक्षा एक मुद्दा बना। पटना में राममोहन राय सेमिनरी में महिलाओं ने शिक्षा के साथ–साथ बाल विवाह के खिलाफ समिति बनाने का सुझाव दिया। बिहार सहित दूसरे राज्यों में भी सुधार आंदोलन चल रहा था। जल, जंगल जमीन के साथ–साथ महिलाएं अपने वोट देने के अधिकार को लेकर भी संघर्ष कर रहीं थी। इतिहास गवाह है कि देश भर में चले असहयोग आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने जमकर हिस्सा लिया। बिहार में महिलाओं ने अपने मताधिकार की मांग को लेकर भी लंबा संघर्ष किया है। बिहार की कांउसिल में महिलाओं के वोट देने का प्रस्ताव तो गिर गया पर महिलाओं का संघर्ष जारी रहा। 1929 में बिहार और ओडिशा की महिलाओं को वोट देने का अधिकर मिला। यह एक ऐसा अधिकार था जिसने महिलाओं के लिए राजनीति का दरवाजा खोला। बिहार में प्रांतीय सभाओं के चुनाव दोनों सदनों के लिए एक साथ हुए। राज्य की चार महिला सीटों के लिए कांग्रेस की ओर से कामाख्या देवी को प्रत्याशी बनाया गया। कामाख्या देवी और सरस्वती देवी बहुमत से जीती। आजादी मिलने के बाद महिलाओं को बालिग मताधिकार के आधार पर वोट देने और चुनाव में प्रत्याशी बनने का अधिकार तो मिला पर आधी आबादी को उनके अनुपात में प्रतिनिधित्व नहीं मिला।

शब्द संकेत : आंदोलन, बिहार, महिला, मताधिकार।

विषय प्रवेश :

देश की आजादी की लड़ाई रही हो या पुरूषों के साथ बराबरी का मामला, महिलाओं ने हर आंदोलन में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया है। भारतीय स्त्री आंदोलन को स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से जोड़ कर देखना होगा। जिसकी शुरूआत सन्यासी विद्रोह से होता है। संन्यासी विद्रोह की सूत्रधार देवी चैधरानी को अंग्रेज इतिहासकारों ने दस्यु रानी की संज्ञा दी थी। वहीं देवी चौधरानी ने संन्यासी विद्रोह का सूत्रपात किया। उस समय के लेफ्टिनेंट ब्रेनन की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि भवानी पाठक की विद्रोही गतिविधियों के पीछे देवी चैधरानी का प्रमुख हाथ था। भवानी पाठक के मारे जाने के बाद भी देवी चैधरानी ने कभी हार नहीं मानी। बराबर लड़ती रही। अतं तक अंग्रेजों के हाथ नहीं आई।

1857 से लेकर 1942 तक आजादी आंदोलन में महिलाओं के संघर्ष की ऐसी हजारों गाथाएं हैं जिसे समेटने में जाने कितने वर्ष लगेंगे। उन नामों में से सरदार भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू जैसे क्रांतिकारियों की भाभी थीं और आजादी के आंदोलन में सबकी साझीदारी। दुर्गा भाभी अगर नहीं होती तो शायद इतिहास में इन क्रांतिकारियों को इतनी जगह नहीं मिलती।

आजादी के लिए लड़ने वाली महिलाओं की सबसे बड़ी चुनौती थी समाज में स्त्री–पुरूष के बीच विभेद के खिलाफ आगे आना। इस विभेद के पीछे मूलरूप से सत्ता का संघर्ष है। मानव सभ्यता

का इतिहास हमें बताता है कि राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक यहां तक कि व्यक्तिगत स्तर पर सत्ता का यह खेल प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से चलता रहता है। और आज भी जारी है।

1890 के आस–पास महाराष्ट्र में कशीबाई कनिकतर और आनंदीबाई जोशी पहली बार जूते पहनकर और छाता लेकर निकली, यह कह कर उन पर पत्थर बरसाये गए कि उन्होंने पुरूषों के अधिकार वाले प्रतीकों को अपनाकर उनका अपमान किया है। उसी दौर में ताराबाई शिंदे द्वारा लिखित किताब स्त्री–पुरूष तुलना पर जमकर हमला हुआ। इस मसले पर कृष्णराव भलेकर और ज्योतिबा फूले के बीच तीखी बहस हुई। पुस्तक में स्त्री–पुरूष की तुलना करते हुए कहा गया कि धोखेबाजी, मक्कारी, संदिग्ध चरित्र और असहिष्णुता जो अवगुण स्त्रियों में माने जाते हैं, वे समान रूप से पुरूषों में भी मौजूद हैं। ये बहस साबित करता है कि दशकों पहले र्वचस्वविहीन समाज के खिलाफ आंदोलन के बीज बोए जा रहे थे।

देश भर में जब महिलाएं अपने अधिकार के लिए आंदोलन कर रही थीं, बिहार उस आंदोलन से अछूता नहीं था। परंपरओं की अनेक धाराओं के विरूद्ध बिहार की महिलाओं ने भी मोर्चा खोला। बिहार को जब बंगाल प्रेसिडेंसी से अलग किया गया, उस समय बिहार में स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या काफी कम थी। उसी दौरान शुरू हुए सुधार आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने भूमिका निभाई। शिक्षा एक मुद्दा बना। पटना में राममोहन राय सेमिनरी में महिलाओं ने शिक्षा के साथ–साथ बाल विवाह के खिलाफ समिति बनाने का सुझाव दिया। बिहार सहित दूसरे राज्यों में भी सुधार आंदोलन चल रहा था। जल, जंगल जमीन के साथ–साथ महिलाएं अपने वोट देने के अधिकार को लेकर भी संघर्ष कर रहीं थी।

सन् 1917 ई. में बिहार में महात्मा गाँधी के पदार्पण के साथ ही आंदोलन में महिलाओं का झुकाव बढ़ गया। 1919 तक कस्तुरूबा गाँधी, श्रीमती सरला देवी, प्रभावती जी, राजवंशी देवी, सुनीता देवी, राधिका देवी और वीरांगना महिलाओं की प्रेरणा से सम्पूर्ण बिहार की महिलाओं में आजादी के प्रति रूझान बढ़ गया।

श्रीमती सवत्री देवी, ने प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन के दौरान होने वाला समारोहों के बहिष्कार आंदोलन का नेतृत्व प्रदान किया। पटना की श्रमती सी.सी.दास और श्रीमती उर्मिला देवी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों में चरखा एवं अन्य स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार में भाग लिया।

1921 ई. में देशबंधु कोष के लिए जब गांधी जी ने बिहार का भ्रमण किया तो यहां कि महिलाओं ने अपने आभूषण तक को दान दे दिया। इस कार्य में महात्मा गांधी के साथ श्रीमती प्रभावती देवी (जयप्रकाश नारायण की पत्नी) ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1921 ई0 के नमक आंदोलन में भी बिहार की महिलाओं ने बड़े जोश–खरोस के साथ भाग लिया। श्रीमती शैलबाला राय के उत्तेजक भाषण से प्रभावित होकर संथाल परगना की महिलाओं के नमक कानून को भंग किया शाहाबाद जिले के श्री राम बहादुर की पत्नी ने सासाराम थाने के समझ नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया।

हजारीबाग की श्रीमती सरस्वती देवी तथा श्रीमती साधना देवी को नमक कानून के उल्लंघन के लिए छह माह की सजा भी मिली। गिरिडीह कि श्रमती मीरा देवी को भी गिरफ्तार किया गया।

पटना में श्रीमती हसन इमाम तथा श्रीमती विंध्यवासिनी देवी के नेतृत्व में महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों के दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन को सफल बनाया। पटना के तत्कालीन कलेक्टर को इन महिलाओं से मुकाबला करने के लिए भारी संख्या में महिला पुलिस बल की बहाली करनी पड़ी। मूंगेर की श्रीमती शाह मोहम्मद जुबेर एक बड़े घराने की मुस्लिम महिला थी, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया।

संथाल परगना जिले में श्रीमती साधना देवी नेतृत्व संभाल कर रखा था। 23 मार्च 1931 को सरदार भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को दिए गए मृत्युदंड के विरोध में आरा में एक विराट सभा का आयोजन हुआ, जिस की अध्यक्षता श्रीमती कुसुम कुमारी देवी ने की।

4 जनवरी, 1933 को बिहार में गांधीजी की गिरफ्तारी दिवस मनाया गया। 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने के आरोप में पटना में डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद की पत्नी श्रीमती राजवंशी देवी तथा डिक्टेटर चंद्रावती देवी साहित साथ महिलाओं को गिरफ्तार किया गया। श्रीमती राजवंशी देवी तथा चंद्रावती देवी को डेढ़ वर्ष कारावास का दंड भी मिला।

1941 में महात्मा गांधी ने जब संप्रदाय के तत्वों के विरोध में सत्याग्रह किया तो इसके समर्थन में बिहार की महिलाओं ने भी सत्याग्रह किया। बिहार के खादी आंदोलन में महिलाओं ने बढ़–चढ़कर हिस्रूसा लिया। सरला देवी, सावित्री देवी, लीला देवी, श्रीमती शफी, शारदा कुमारी, विंध्यावासिनी देवी, प्रयबंदा देवी, भगवती देवी जैसे महिलाओं ने इस आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1942 में भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान बिहार की महिलाओं, विशेषकर चरखा समिति की सदस्यों ने अगस्त क्रांति की ज्वाला को धधकाने और उसे व्यापक बनाने की भरभूर कोशिश की। 9 अगस्त 1942 को पटना में आंदोल का नेतृत्व प्रसाद की बहन श्रीमती भगवती देवी के नेतृत्व में श्रीमती सरस्वती देवी कर रही थी, जिन्हें गिरफ्तार किया गया। लेकिन जब श्रीमती सरस्वती देवी को हजारीबाग से भागलपुर जेल ले जाया जा रहा था तो विद्यार्थियों ने एक जत्था ने धावा बोलकर उन्हें छुड़ा लिया, फिर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

भागलपुर जिले में आंदोलन का नेतृत्व श्रीमती माया देवी कर रही थी। गोविंदपुर गांव के श्री नरसिंह गोप की पत्नी जिरियावती ने 16 अंग्रेज सिपाहियों को गोली मार दी। छपरा में 19 अगस्त, 1942 को हुई एक विशाल जनसभा की अध्यक्षता शांति देवी ने की।

छपरा जिले के दिघवारा प्रखंड पर तिरंगा झंडा फहराने के आरोप में मलखाचक के स्वर्गीय राम विनोद सिंह की दो पुत्रियां शारदा एवं सरस्वती को 14 और 11 वर्ष की सजा दी गई। संथाल परगना के हरिहर मिर्धा की पत्नी बीरजी देवी की पुलिस ने हत्या कर दी।

गया जिले की प्यारी देवी को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया। वैशाली जिले के किशोरी प्रसन सिंह की पत्नी सुनीति देवी एवं बैंकुठ शुक्ल की पत्नी राधिका देवी ने पुरूष के वेश में साइकिल पर भ्रमण करके जन जागरण किया।

वैशाली की ही श्रीमती विंदा देवी शहीद फुलेना प्रसाद की पत्नी तारा देवी, मुजफ्फरपुर की भवानी मेहरोत्रा, भागलपुर की रामस्वरूप देवी, कुमारी धतूत्री देवी, जिरिया देवी, मुंगेर की संपत्तिया

देवी, शाहाबाद की फूलं कुमारी,पटना की सुधा कुमारी शर्मा आदि महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में अद्वितीय योगदान दिया।

1642 के भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान अनेक महिलांए पुलिस की गोली से शहीद भी हुई, जिनमें प्रमुख है। छोड़मारा गांव की श्रीमती विराजी मोदीयाइन, शाहाबाद के गाँव लासाढ़ी के शिव गोपाल दूषाध की पत्नी अकेली देवी, मुंगेर के गांव रोहियार की कुंवारी धतूरी देवी आदि, बिहार की अन्य अज्ञात महिला नेत्री थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई केवल पुरूषों की हिस्सेदारी से फतह नहीं की गयी बल्कि इस महायज्ञ में महिलाओं की भूमिका भी उल्लेखनीय है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अंग्रेजों के विरूद्ध पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश की बेटियों ने अपना कर्तव्य निभाया। उन्होने अंग्रेजों के विरूद्ध कदम उठाए, वीरता और साहस तथा नेतृत्व की क्षमता का अभूतपूर्व परिचय दिया। 1857 के बगावत के समय राजघराने की महिलाएं आजाद भारत का सपना पूरा करने के लिए पुरूषों के साथ एकजुट हुई। इनमें प्रमुख थी इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर और झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई।

इतिहास गवाह है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जहां पुरूषों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया तो महिलाएं भी पीछे नहीं रही। महिलाओं ने समय–समय पर अपनी बहादुरी और साहस का प्रयोग कर पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चली। रानी लक्ष्मीबाई और रानी चेनम्मा जैसी वीरांगनाओं ने अंग्रेजों से लड़ते हुए अपनी जान दे दी। तो सरोजिनी नायडू और लक्ष्मी सहगल जैसी वीरांगनाओं ने देश की आजादी के बाद भी सेवा की।

1910 में बंगाल में सरला देवी ने भारत स्त्री मंडल की स्थापना की। 1917 में सरोजनी नायडू के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल स्त्रियों की रक्षा और मताधिकार को लेकर मांटेग्यू चेम्सफोर्ड से मिला। अप्रैल 1918 में पटना में हुए एक आयोजन में एनी बेसेंट ने कहा कि जब तक औरतों को अधिकार नहीं मिलता, मोर्ले मिंटो सुधार से कोई लाभ नहीं होगा। महिलाओं के मताधिकार की मांग को लेकर साउथ बोरो कमेटी की स्थापना की गई। 1919 के जनवरी में पटना में भी अखिल भारतीय महिला सम्मेलन हुआ। बिहार की महिलाओं ने बाल विवाह, दहेज प्रथा और मताधिकार के मुद्दे पर अपनी आवाज बुलंद की। उसी साल राजकिशोरी देवी ने मझैलिया, लहेरिया सराय में बिहार महिला पीठ की स्थापना की। 1921 के राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में बिहार से आठ महिलाओं ने हिस्सा लिया।

इतिहास गवाह है कि देश भर में चले असहयोग आंदोलन में बिहार की महिलाओं ने जमकर हिस्सा लिया। बिहार में महिलाओं ने अपने मताधिकार की मांग को लेकर भी लंबा संघर्ष किया है। बिहार की कांउसिल में महिलाओं के वोट देने का प्रस्ताव तो गिर गया पर महिलाओं का संघर्ष जारी रहा। 1929 में बिहार और ओडिशा की महिलाओं को वोट देने का अधिकर मिला। यह एक ऐसा अधिकार था जिसने महिलाओं के लिए राजनीति का दरवाजा खोला। बिहार में प्रांतीय सभाओं के चुनाव दोनों सदनों के लिए एक साथ हुए। राज्य की चार महिला सीटों के लिए कांग्रेस की ओर से कामाख्या देवी को प्रत्याशी बनाया गया। कामाख्या देवी और सरस्वती देवी बहुमत से

जीती। आजादी मिलने के बाद महिलाओं को बालिग मताधिकार के आधार पर वोट देने और चुनाव में प्रत्याशी बनने का अधिकार तो मिला पर आधी आबादी को उनके अनुपात में प्रतिनिधित्व नहीं मिला।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा :

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के क्रम में विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखित पुस्तकों का अवलोकन किया गया है जिसमें :

समिता सेन (2000) द्वारा लिखित 'ओमेन रिफॉर्म मूवमेंट इन इंडिया' में कहना है कि 19वीं सदी में महिलाओं द्वारा किये गये आंदोलन का परिणाम है कि महिलाओं को पुरूषों के समान समानता का अधिकार प्रदान किया गया।

अपर्णा वसु एवं राय भारती (2003) द्वारा लिखित आलेख में यह उपघाटित किया गया है कि स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी वर्चस्व के लिए ही नहीं बशर्ते देश की स्वतंत्रता के लिए भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुमार राधा (1993) द्वारा लिखित पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ डूईंग : एन इलुस्ट्रेटेड एकांउट ऑफ मूवमेन्ट फॉर ऑमेन राईट्स एण्ड फेमिनिज इन इडिया 1800–1900 में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका को विस्तृत रूप में रेखांकित किया गया है।

थापर सुरूचि (2006) द्वारा लिखित पुस्तक ऑमेन इन द इडियन नेशनल मूवमेन्ट : अनसीन फेसेज एण्ड अनहर्ड भॉइस 1930–1942 में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं द्वारा दी गई कुर्बानी को रेखांकित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :

स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर बिहार की महिलाओं का योगदान विषय के अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित है :–

- इस अध्ययन के आधार पर स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर बिहार की महिलाओं का योगदान का तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।
- वर्त्तमान अध्ययन के आधार पर स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान का अन्वेषन किया गया है।

अध्ययन पद्धति :

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्त्तमान अध्ययन

स्वतंत्रता आंदोलन में उत्तर बिहार की महिलाओं का योगदान के विविध पक्षों के अन्वेषण से संबंधित है अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत पत्र–पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया है।

निष्कर्ष : स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान किसान आंदोलन, नारी–मुक्ति आंदोलन, असहयोग आंदोलन एवं नमक आंदोलन में उत्तर बिहार की महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। कई एक महिलायें अपनी–अपनी लोक लिहाज को त्यागकर पुरूषों के बीच आंदोलन में कूद पड़ी और देश की स्वतंत्रता के लिए अपनी प्राणों को न्योछावर कर दी। देश की स्वतंत्रता के लिए अपने को न्योछावर करने वाली महिलाओं का गुणगान वर्तमान समय में नहीं हो रहा है जो चिंतनीय है।

संदर्भ स्रोत :

1. Samita Sen (2000) on "Towards a Feminist Politics, the Indian Women's Movement in Historical Perspective" (the World Bank Development Research Group Poverty Reduction and Economic Management Network, Policy Research Report on Gender and Development, Working paper Series No. 9.
2. Basu Aparna and Ray, Bharati(2003) "Women's Struggle": A History of the All India Women Conference, 1927-2002", Manohar Publication, Delhi.
3. Kumar, Radha (1993), The History of Doing: An Illustrated Account of Movements for Women's Rights and Feminism in India 1800-1900 Zubaan Publication, New Delhi:
4. Thapar, Suruchi (2006) Nationalist Memories: Interviewing Indian Middle Class Nationalist Women, 35-46, Sage Publication, New Delhi.